Total No. of Questions - 3] [Total Pages : 3

(2022)

9372

M.A. Examination

SANSKRIT

(निबन्ध तथा अनुवाद)

Paper–XVI

(Semester–IV)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80 / Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. अयस्तनेषु विषयेषु कावपि **द्वौ** निबन्धों लेखनीयौ :

   (क) माघे सन्ति त्रयो गुणाः।

   (ख) हिमालयः।

   (ग) ध्वनिसम्प्रदायः।

   (घ) संस्कृतभाषा।

(ङ) नैषचे पदलालिप्यम्।

(च) कोरोना महामारी।

(छ) योगाश्चित्र वृत्ति तिरोयः।

(ज) विद्या यतं सर्व अतत्रद्यातम्। 2×20=40

(2×25=50)

2. कान्यपि **दश** वाक्यानि संस्कृतेऽनूद्यताम्:

(क) पुरी पूर्व में स्थित है।

(ख) रामायण में राम का चरित्र उदांत्त है।

(ग) पाणिनि संस्कृत व्याकरण के पुरोचा हैं।

(घ) हम और तुम पढ़ना सीखें।

(ङ) मीना अपनी माता के साथ मेला जाएगी।

(च) सुधा पिता का स्मरण करती है।

(छ) कोरोना से संसार भयभीत है।

(ज) मोहन नदी के दोनों ओर खेलता है।

(झ) राहु तथा केतु छायाग्रह हैं।

(ञ) अभिनवगुप्त एक शैव दार्शनिक थे।

(ट) पर्वत सुन्दर लगते हैं।

(ठ) हिमालय की प्राकृतिक शोभा देखने योग्य है।

(ड) संस्कृत पढ़ना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है।

(ढ) गाँव के चारों तरफ जल ही जल है।

(ण) झूठ बोलना चारित्रिक कमजोरी है। 2×10=20

(2½×10=25)

3. अधोलिखितो गद्यांशः संस्कृतेऽनूद्यताम्:

भारतीय चिन्तन में मोक्षप्राप्ति या भगवत्प्राप्ति ही सर्वोच्च सुख है। इसीलिए ईश्वर को सच्चिदानन्द के रूप में वर्णित किया जाता है। ईश्वर की प्राप्ति में जो सुख मिलता है, वह सर्वाधिक प्रिय होने के साथ ही अवर्णनीय भी है। भगवान के सुख में सुखी होना रूप त्याग ही भक्ति का आधार है। इसके अतिरिक्त जो अपनी आत्मा का हनन करते हैं, वे अद्यमगति को प्राप्त करते हैं। एकान्त में शान्त भाव से बैठकर ईश्वर मनन से शान्ति और सुख की प्राप्ति होती है। इस सुख से व्यवहार की शुद्धि होती है और व्यवहार शुद्धि व्यक्ति स्वतः ही स्वस्थ हो जाता है। भौतिक साधनों से कभी सुख प्राप्त नहीं हो सकता है, यही भारतीय मनीषा है।

20(25)